बढ़ते भ्रष्टाचार के लिए हम कितने दोषी ?

नरेश कुमार
रा.ज.सं., रूड़की

भारत में जिधर भी दृष्टि डालिए हर ओर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार व्याप्त है। जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रह गया है। एक मानव की पहचान जहां परोपकारी, निःस्वार्थी, कर्तव्यपरायण के रूप में की जाती है, वहीं इनके प्रतिकूल आचरण करने वाले को 'भ्रष्टाचारी' की संज्ञा से विभूषित किया जाता हैं। भ्रष्टाचार का दायरा बहुत ही बड़ा हैं। यह आज की उपज नहीं है, बल्कि इसकी उपज का श्रेय भी मनुष्य को ही जाता है। इसका जीता–जागता उदाहरण हमें हर मोड़ पर मिल जाता है। जैसे किसी भी कार्यालय में चले जाइए, बाबू है, परंतु फाइल नहीं हैं। फाइल है, तो बड़े साहब नहीं है। बड़े साहब है, तो समय नहीं है। यदि समय है, तो एक आम आदमी के लिए नहीं, धनवान तथा पहुंचवालों के लिए हैं। एक साधारण आदमी को फाइल पास करवाने के लिए न मालूम कितने लोगों की जेबें गरम करनी पड़ती हैं। मंत्री से लेकर संतरी तक इसका फैलाव है। राजनीतिज्ञ वोट पाने के लिए समाज को गुमराह करता है, डॉक्टर अधिक धन के लालच में रोगी का ठीक से उपचार नहीं करता, इंजीनियर ठेकेदारों से सांठ–गांठ करके पुलों का निर्माण काम चलाऊ करता है। अध्यापक कक्षा में न पढ़ाकर ट्यूशन में पढ़ाता है। व्यापारी मिलावट करता है। पुलिस अपराधियों के साथ मिलकर अनेक अपराधों को अंजाम देती है। किसी की योग्यता, अनुभव आदि को ताक पर रखकर अयोग्य व्यक्ति को किसी भी पद पर नियुक्त कर दिया जाता है।

इससे यह पता चलता है कि इन सभी के लिए हम स्वयं दोषी हैं। इन सभी को आमंत्रण हमने ही दिया है। यदि हम आज संभल जाए तो हमारा कल एक स्वर्णिम भविष्य होगा। प्रत्येक व्यक्ति इस भ्रष्टाचार को उतार फेंकने का दृढ़ संकल्प लें। हर व्यक्ति अपनी मेहनत, लगन, अपनी इच्छा शक्ति से अपने लक्ष्य तक पहुंचे, चाहे उसे कितनी ही बांधाओं को पार करना पड़े, फिर उसे लक्ष्य प्राप्ति के बाद जिस सुख की अनुभूति होगी वो शायद ही जिन्दगी में उसने अनुभव की होगी।

मैं नहीं मानता कि इसका निराकरण दूरदर्शन के कार्यक्रमों और आकाशवाणी के प्रसारण से, जन–संचार माध्यमों से या फिर पठन सामग्री से होगा। इसका समाधान केवल प्रत्येक मनुष्य की दृढ़ इच्छा शक्ति द्वारा ही संभव है। सदाचार की नींव घर से डालनी होगी। प्रत्येक माता–पिता को अपने बालक या बालिका में आत्म–विश्वास कूट–कूट कर भरना होगा। यदि उनमें आत्म–विश्वास होगा तो वे जीवन में आने वाली हर बाधा को भेदते हुए, बिना किसी सहारे के अपने लक्ष्य तक पहुंच जाएंगे। एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं और ग्यारह से सैकड़ों और सैकड़ों से हजारों, लाखों अर्थात् हमारा समाज ही सुधर जाएगा। जब हमारा समाज सुधरेगा तो हमारा राष्ट्र मजबूत होगा और भ्रष्ट्राचार का नामोनिशान मिट जाएगा।

"दृढ़ शक्ति, दृढ़ संकल्प की लेकर मशाल,
आओ प्रज्वलित करें प्रत्येक मानव ह्रदय को,
समाज में बोलबाला न होगा फिर भ्रष्टाचार का,
सुखद भविष्य बन जाएगा सभी का,
साम्राज्य होगा सिर्फ सदाचार का।"